IJARETY

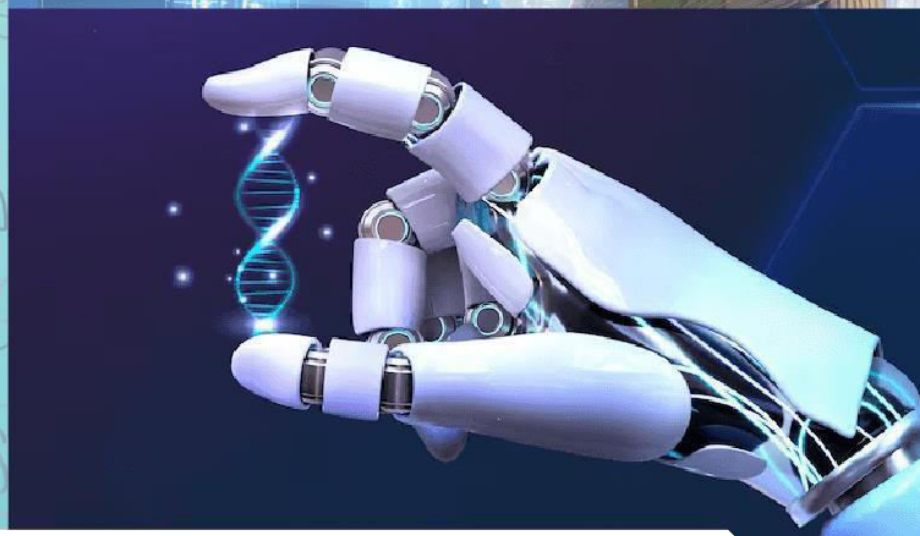

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 12, Issue 4, July-August 2025

Impact Factor: 8.152

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi cross ref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

बाड़मेर जिले के मेलों की सांस्कृतिक समृद्धि और पर्यटन विकास में उपादेयता

Jyoti

NET-JRF, Subject- History, District- Barmer, India

सारांश: राजस्थान के पश्चिमी सीमांत पर स्थित बाड़मेर जिला थार मरुस्थल की गोद में बसा एक अनोखा इलाका है, जो अपनी रेतीली भूमि, कठोर मौसम और जीवंत लोक संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह शोध पत्र बाड़मेर के मेलों की सांस्कृतिक समृद्धि और पर्यटन विकास में उनकी भूमिका का परीक्षण करता है, जहां मेले न केवल सामाजिक मिलन और धार्मिक आस्था के अवसर हैं, बल्कि लोक परंपराओं के संरक्षक और आर्थिक उत्थान के माध्यम भी हैं। बाड़मेर के मेले थार की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं, जो प्राचीन मालाणी राज्य से जुड़े इतिहास को दर्शाते हैं।

शोध से प्रमुख निष्कर्ष के अनुसार मेले सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम हैं, जहां लोक गीत, नृत्य और हस्तशिल्प पर्यटकों को राजस्थानी जीवन से जोड़ते हैं। पर्यटकों की बढ़ती संख्या से स्थानीय अर्थव्यवस्था का उत्थान होता है। ये मेले बहुलतावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहां हिंदू, जैन और लोक देवताओं की पूजा एक साथ होती है, जो सामाजिक सद्भाव को मजबूत बनाती है। हालांकि, चुनौतियां जैसे रेगिस्तानी मौसम से प्रभावित आयोजन और अवसंरचना की कमी हैं, लेकिन मेले सतत पर्यटन को प्रेरित करते हैं। राजस्थान पर्यटन नीति के तहत मेले विरासत संरक्षण और आर्थिक विकास का माध्यम हैं, जो थार की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर फैलाते हैं। भविष्य में उचित प्रबंधन से ये मेले राजस्थान की पर्यटन छवि को और मजबूत करेंगे, जहां सांस्कृतिक जुड़ाव और आर्थिक लाभ थार के लोगों का जीवन बेहतर बनाएंगे।
मुख्य शब्द : बाड़मेर मेले, लोक परंपराएँ, पशु मेला, सांस्कृतिक पर्यटन, राजस्थान विरासत।

I. प्रस्तावना

बाड़मेर जिला राजस्थान के पश्चिमी भाग में थार मरुस्थल के विस्तार में स्थित है, जो 28,387 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल के साथ भारत का पांचवां सबसे बड़ा जिला है। ऐतिहासिक रूप से, बाड़मेर को प्राचीन मालाणी राज्य के नाम से जाना जाता था, जो रावल मल्लिनाथ राठौर से जुड़ा है, जिन्हें स्थानीय लोग देवता के रूप में पूजते हैं। बारहवीं शताब्दी में यहां परमार राजवंश का शासन था, जिन्होंने जूना नामक शहर बसाया, जो वर्तमान बाड़मेर से 25 किलोमीटर दूर है। जिले का नाम बहड़ राव या बार राव से पड़ा, जो परमार शासक थे। रावत लुका ने परमारों को हराकर जूना में राज्य स्थापित किया, और रावत भीमा ने 1552 ईस्वी में राजधानी को वर्तमान बाड़मेर में स्थानांतरित कर किला बनवाया। सांस्कृतिक परिदृश्य में, बाड़मेर लोक संगीत और कला का खजाना है, जहां भोपा समुदाय देवताओं के गीत गाते हैं, मुस्लिम ढोली ड्रम बजाते हैं, और लंगा-मांगणियार समुदाय थार की कहानियां सुनाते हैं। यहां की कढ़ाई, लकड़ी की नक्काशी, मिट्टी के बर्तन और ब्लॉक प्रिंटिंग विश्व प्रसिद्ध हैं, जो मेले के माध्यम से सदियों की लोक परंपराओं को जीवंत रखते हैं।

मेलों की अवधारणा राजस्थान की सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी है, जहां ये न केवल व्यापारिक और मनोरंजन के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि लोक कला के प्रदर्शन, धार्मिक रीति-रिवाजों के पालन और सामाजिक मिलन के माध्यम से गहरा सांस्कृतिक जुड़ाव पैदा करते हैं। मेले थार के लोगों के लिए वार्षिक उत्सव हैं, जहां पशु व्यापार के साथ-साथ लोक नृत्य जैसे घूमर और कालबेलिया, संगीत सत्र और हस्तशिल्प बाजार एक साथ आते हैं। ये अवसर स्थानीय समुदायों को अपनी परंपराओं

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

को साझा करने का मंच देते हैं, जहां देवी-देवताओं की पूजा, लोक कथाओं का वाचन और सामूहिक भोज सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखते हैं। मेले व्यापार तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे सांस्कृतिक आदान-प्रदान के पुल बनते हैं, जहां विभिन्न जातियों और समुदायों के लोग एक छत के नीचे इकट्ठा होते हैं और अपनी विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाते हैं।

इस शोध का महत्व बाड़मेर के मेलों के योगदान से जुड़ा है, जो पर्यटन को बढ़ावा देकर स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाते हैं और सांस्कृतिक संरक्षण को प्रोत्साहित करते हैं। मेले पर्यटकों को थार की वास्तविक जीवनशैली से परिचित कराते हैं, जहां लोक प्रदर्शन और हस्तशिल्प की बिक्री से कारीगरों की आय बढ़ती है। यह प्रक्रिया ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है, क्योंकि मेले से प्राप्त राजस्व संरक्षण कार्यों में लगता है और समुदायों को आत्मनिर्भर बनाता है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य : बाड़मेर जिले के मेले थार मरुस्थल की रेतीली भूमि पर आयोजित होने वाले जीवंत उत्सव हैं, जो प्राचीन इतिहास, लोक परंपराओं और सामुदायिक मिलन को एक साथ बांधते हैं। ये मेले न केवल धार्मिक आस्था और व्यापार के केंद्र हैं, बल्कि वे राजस्थानी संस्कृति की समृद्धि को दर्शाते हैं, जहां लोक नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प का अनोखा संगम देखने को मिलता है। बाड़मेर का इतिहास मालाणी राज्य से जुड़ा है, जहां रावल मल्लिनाथ जैसे लोक नायक की स्मृति में मेले आयोजित होते हैं। ये उत्सव थार के कठोर जीवन में आनंद का स्रोत हैं, जो सदियों से चले आ रहे हैं और स्थानीय समुदायों को एकजुट रखते हैं। मेलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्राचीन व्यापार मार्गों से जुड़ी है, जहां पशु व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रमुख था। सांस्कृतिक रूप से, ये मेले मांगणियार और लंगा समुदायों के लोक गीतों, घूमर नृत्य और कढ़ाई जैसे शिल्पों को संरक्षित रखते हैं, जो थार की बहुलतावादी पहचान को उजागर करते हैं। अब हम बाड़मेर के प्रमुख मेलों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर नजर डालते हैं, जहां हर मेला अपनी अनोखी विरासत और महत्व रखता है।

मल्लिनाथ पशु मेला बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा गांव में चैत्र माह में दो सप्ताह तक चलने वाला एक प्रमुख आयोजन है, जो रावल मल्लिनाथ की स्मृति में आयोजित होता है। रावल मल्लिनाथ 14वीं शताब्दी के एक लोक नायक थे, जो राव सलखा के पुत्र थे और स्थानीय लोगों द्वारा देवता के रूप में पूजे जाते हैं। मेला की उत्पत्ति रावल मल्लिनाथ के प्रशंसकों के बीच व्यापारिक लेन-देन से हुई, जो तिलवाड़ा में एकत्र होते थे और अपने अच्छी नस्ल के पशुओं को लेकर आते थे। यह मेला चैत्र कृष्ण एकादशी से शुक्ल एकादशी तक चलता है, जो मार्च-अप्रैल के महीनों में पड़ता है। ऐतिहासिक रूप से, यह मेला प्राचीन मालाणी क्षेत्र के व्यापार मार्गों से जुड़ा है, जहां थार के रेगिस्तानी समुदाय पशुपालन पर निर्भर थे। लूनी नदी के किनारे स्थित तिलवाड़ा गांव इस मेला का केंद्र है, जहां हजारों पशु जैसे ऊंट, घोड़े, गायें और थारपारकर नस्ल के बैल बिकते हैं। यह भारत का सबसे पुराना और बड़ा पशु मेला माना जाता है, जहां व्यापार के साथ-साथ लोक प्रदर्शन जैसे नृत्य, गीत और खेल-कूद होते हैं।

सांस्कृतिक महत्व के रूप में, मेला थार की लोक परंपराओं को जीवित रखता है, जहां मांगणियार गायक रावल मल्लिनाथ के गीत गाते हैं और घूमर नृत्य से वातावरण गूंजता है। स्थानीय कारीगर यहां कढ़ाई, लकड़ी की नक्काशी और मिट्टी के बर्तनों का प्रदर्शन करते हैं, जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं। मेला सामाजिक एकता का प्रतीक है, जहां विभिन्न जातियों के लोग एकत्र होते हैं और पशु व्यापार से जीविका कमाते हैं। रावल मल्लिनाथ का मंदिर मेला स्थल पर स्थित है, जहां पूजा-अर्चना से धार्मिक महत्व जुड़ता है। यह मेला थार के पशुपालन संस्कृति को दर्शाता है, जहां पशु न केवल संपत्ति हैं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीक भी। पर्यटन की दृष्टि से, मेला राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षण का केंद्र है, जहां लोग रेगिस्तानी जीवन का अनुभव लेते हैं। कुल मिलाकर, मल्लिनाथ पशु मेला बाड़मेर की ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक जीवंतता का प्रतिनिधित्व करता है, जो सदियों से चला आ रहा है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

थार महोत्सव बाड़मेर जिले में मार्च महीने में सरकारी स्तर पर आयोजित होने वाला एक प्रमुख उत्सव है, जो ऊंट दौड़, लोक नृत्य और संगीत के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह महोत्सव राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा 1986 में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य थार मरुस्थल की सांस्कृतिक धरोहर को दुनिया के सामने लाना और पर्यटन को बढ़ावा देना है।

ऐतिहासिक रूप से, थार महोत्सव बाड़मेर की प्राचीन मालाणी परंपराओं से प्रेरित है, जहां रेगिस्तानी जीवन की झलकियां जैसे ऊंट सजावट और लोक खेल शामिल हैं। महोत्सव तीन दिनों तक चलता है, जिसमें मुख्य कार्यक्रम बाड़मेर शहर में होते हैं। सांस्कृतिक महत्व के रूप में, यह उत्सव मांगणियार और लंगा समुदायों के लोक संगीत को मंच प्रदान करता है, जहां थार की कहानियां गाई जाती हैं। लोक नृत्य जैसे घूमर, कालबेलिया और गेर नृत्य यहां प्रदर्शित होते हैं, जो राजस्थानी कला की विविधता दिखाते हैं। ऊंट दौड़ और ऊंट नृत्य थार की पशु संस्कृति को उजागर करते हैं, जहां ऊंटों को सजाकर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। हस्तशिल्प बाजार में बाड़मेर की कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग और लकड़ी की नक्काशी बिकती है, जो स्थानीय कारीगरों को लाभ पहुंचाता है।

महोत्सव का पर्यटन प्रभाव बड़ा है, जहां हर साल हजारों पर्यटक आते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिलती है। राजस्थान दिवस के साथ जुड़कर यह उत्सव राज्य की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाता है। थार महोत्सव थार की बहुलतावादी संस्कृति को दर्शाता है, जहां हिंदू, मुस्लिम और जैन समुदाय एक साथ भाग लेते हैं। यह उत्सव आधुनिक समय में सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम बना है, जहां युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ती है। कुल मिलाकर, थार महोत्सव बाड़मेर की सांस्कृतिक जीवंतता और पर्यटन क्षमता का प्रतीक है।

नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला बाड़मेर जिले में दिसंबर-जनवरी में जैन तीर्थ पर आयोजित होने वाला एक बड़ा धार्मिक आयोजन है, जहां लाखों श्रद्धालु जमावड़ा लगाते हैं और इसका धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्व अपार है। यह मेला पौष कृष्ण दशमी पर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक के अवसर पर मनाया जाता है, जो जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर हैं। नाकोड़ा जी मंदिर तीसरी शताब्दी का प्राचीन तीर्थ है, जहां पार्श्वनाथ की काले पत्थर की मूर्ति चमत्कारी मानी जाती है। मेला का इतिहास मुगल काल से जुड़ा है, जब मंदिर को लूटा गया था, लेकिन 15वीं शताब्दी में पुनर्निर्मित किया गया। मेला एक सप्ताह तक चलता है, जहां लाखों जैन श्रद्धालु दर्शन करते हैं और धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। सांस्कृतिक महत्व के रूप में, यह मेला जैन सिद्धांतों जैसे अहिंसा और शांति को फैलाता है, जो थार के बहुलतावादी समाज में सामाजिक सद्भाव लाता है। मेला में जैन भजन, प्रवचन और लोक प्रदर्शन शामिल होते हैं, जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं। आसपास के बाजारों में जैन कला की वस्तुएं बिकती हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचाती है। यह मेला बाड़मेर की धार्मिक विविधता को दर्शाता है, जहां जैन तीर्थ हिंदू और मुस्लिम समुदायों के साथ सह-अस्तित्व में है। पर्यटन की दृष्टि से, मेला राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षण का केंद्र है, जहां लोग जैन विरासत का अनुभव लेते हैं। कुल मिलाकर, नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक महत्व का अनोखा मिश्रण है।

वीरातरा माता मेला बाड़मेर जिले में ग्रामीण स्तर पर आयोजित होने वाला एक प्रमुख उत्सव है, जो देवी पूजा और लोक परंपराओं का प्रतीक है। यह मेला धोंक गांव में वीरातरा वांकल माता मंदिर में नवरात्रि के दौरान या अन्य धार्मिक अवसरों पर लगता है, जो 900 वर्ष पुराना मंदिर है और अरावली पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है। इस मंदिर की स्थापना विक्रमादित्य द्वितीय से जुड़ी मानी जाती है, जो वांकल माता को समर्पित है, जिन्हें स्थानीय लोग शक्ति का अवतार मानते हैं। मेला का इतिहास प्राचीन काल से है, जहां देवी पूजा के साथ लोक कथाएं और चमत्कार जुड़े हैं। सांस्कृतिक महत्व के रूप में, मेला थार की लोक आस्था को दर्शाता है, जहां भजन, कीर्तन और लोक नृत्य होते हैं। स्थानीय समुदाय देवी से मन्नतें मांगते हैं और मेला सामाजिक मिलन का अवसर बनता है। मेला में हस्तशिल्प और स्थानीय व्यंजन बिकते हैं, जो ग्रामीण संस्कृति को जीवित रखते हैं। यह मेला बाड़मेर की देवी पूजा परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जहां महिलाएं

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

विशेष रूप से भाग लेती हैं। पर्यटन की दृष्टि से, मेला स्थानीय यात्रियों को आकर्षित करता है, जो मंदिर की शांति और लोक परंपराओं का अनुभव लेते हैं। कुल मिलाकर, वीरातरा माता मेला ग्रामीण सांस्कृतिक विरासत का जीवंत उदाहरण है।

खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला बाड़मेर जिले के खेड़ गांव में आयोजित होता है, जो विष्णु भगवान को समर्पित है और धार्मिक महत्व रखता है। यह मेला वैष्णव परंपरा से जुड़ा है, जहां रणछोड़ राय की पूजा होती है। मंदिर प्राचीन है, जो लूनी नदी के किनारे स्थित है और 142 किलोमीटर दूर बाड़मेर से। इस मेले का आयोजन काल मुख्य रूप से नवरात्रि या अन्य वैष्णव त्योहारों पर है, जहां दर्शनार्थी इकट्ठा होते हैं। सांस्कृतिक संदर्भ में, मेला वैष्णव भक्ति को बढ़ावा देता है, जहां भजन और कीर्तन होते हैं। मंदिर में गरुड़ स्तंभ और अन्य देवताओं के मंदिर हैं, जो स्थापत्य कला दिखाते हैं। मेला लोक परंपराओं को जोड़ता है, जहां स्थानीय लोग पूजा और मिलन मनाते हैं। शीतलाष्टमी मेला बाड़मेर में होली के आठ दिनों बाद आयोजित होता है, जो शीतला माता को समर्पित है और स्वास्थ्य की रक्षा का प्रतीक है। यह मेला चैत्र कृष्ण अष्टमी पर पड़ता है, जो मार्च-अप्रैल में होता है। ऐतिहासिक रूप से, यह मेला शीतला माता की पूजा से जुड़ा है, जो चेचक और अन्य रोगों से रक्षा करती हैं। सांस्कृतिक संदर्भ में, मेला में एक दिन पहले पका भोजन खाया जाता है, जो बसोड़ा कहलाता है।
जसोल रानी भटियानी मेला बाड़मेर के जसोल गांव में आयोजित होता है, जो रानी भटियानी को समर्पित है और भाद्रपद तेरस पर या नवरात्रि में लगता है। रानी भटियानी का असली नाम स्वरूप कंवर था, जो जोगीदास भाटी की बेटी थीं और जसोल के कल्याण सिंह से विवाहित हुईं। उनकी मृत्यु के बाद चमत्कारों से देवी रूप में पूजी जाने लगीं। मेला का इतिहास राजपूत परंपरा से जुड़ा है, जहां मांगणियार गीत गाते हैं। सांस्कृतिक संदर्भ में, मेला लोक देवी पूजा का केंद्र है, जहां लाखों भक्त आते हैं। मेला थार की आस्था और लोक गीतों को जीवित रखता है। बाड़मेर के ये मेले सांस्कृतिक धरोहर हैं, जो इतिहास और परंपराओं को संजोए रखते हैं।

I. मेलों का सांस्कृतिक महत्व

बाड़मेर जिले के मेले थार मरुस्थल की रेतीली धरती पर आयोजित होने वाले ऐसे जीवंत उत्सव हैं, जो सदियों से स्थानीय जीवन का अभिन्न हिस्सा बने हुए हैं। ये मेले न केवल मनोरंजन और व्यापार के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि वे थार की सांस्कृतिक आत्मा को संजोए रखते हैं, जहां इतिहास की कहानियां, आस्था की गहराई और समुदाय की एकता एक साथ मिलती है। बाड़मेर के मेले रेगिस्तानी जीवन की कठिनाइयों के बीच आशा और उत्साह का स्रोत हैं, जो लोगों को एकत्र कर उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं। इन मेलों का सांस्कृतिक महत्व बहुआयामी है, जहां लोक परंपराएं, धार्मिक योगदान और कला संरक्षण प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये उत्सव थार की बहुलतावादी संस्कृति को दर्शाते हैं, जहां विभिन्न समुदाय एक साथ आकर अपनी विरासत को साझा करते हैं। मेलों के माध्यम से थार की अनोखी पहचान दुनिया तक पहुंचती है, जो पर्यटकों को रेगिस्तानी जीवन की गहराई से परिचित कराती है। अब हम इन मेलों के सांस्कृतिक महत्व को तीन प्रमुख पहलुओं से समझेंगे, जहां प्रत्येक आयाम थार की सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करता है।

लोक परंपराएं और प्रतीक के रूप में बाड़मेर के मेले थार की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहां लोक गीत, नृत्य और हस्तशिल्प का समावेश मेलों को जीवंत बनाता है। मल्लिनाथ पशु मेला इसका प्रमुख उदाहरण है, यहां लोक गीतों में रावल मल्लिनाथ की वीर गाथाएं गाई जाती हैं, जो थार के इतिहास को जीवित रखते हैं। मांगणियार और लंगा समुदाय के गायक यहां अपनी पारंपरिक धुनों से वातावरण को भर देते हैं, जहां गीत रेगिस्तान की चुनौतियों, प्रेम और वीरता की कहानियां सुनाते हैं। नृत्य के रूप में घूमर और कालबेलिया यहां प्रमुख हैं, जहां महिलाएं रंग-बिरंगे घाघरों में घूमर नृत्य करती हैं, जो थार की महिलाओं की मजबूती का प्रतीक है। कालबेलिया नृत्य सांपों की तरह लहराती गतियों से रेगिस्तानी जीवन की अनिश्चितता को दर्शाता है। हस्तशिल्प के स्टॉलों में स्थानीय कारीगर अपनी

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

कढ़ाई वाली चुनरियां, लकड़ी के खिलौने और मिट्टी के बर्तन बेचते हैं, जो थार की कला को संरक्षित रखते हैं। थार महोत्सव में लोक परंपराएं और भी प्रमुख हो जाती हैं, जो मार्च में तीन दिनों तक चलता है। यहां ऊंट दौड़ एक प्रतीक है, जो थार के लोगों के पशुपालन जीवन को दिखाती है, जहां ऊंटों को सजाकर दौड़ाई जाती है। लोक गीतों में थार की रेत, जल संकट और उत्सव की कहानियां बुनी जाती हैं, जो नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं।

नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला में लोक परंपराएं जैन धार्मिक रीतियों से मिलती हैं, जहां दिसंबर-जनवरी में लाखों श्रद्धालु आते हैं और लोक गीतों में पार्श्वनाथ की कथाएं गाई जाती हैं। वीरातरा माता मेला ग्रामीण स्तर पर लोक प्रतीकों को जीवित रखता है, जहां देवी पूजा के साथ लोक कथाएं सुनाई जाती हैं, जो थार के चमत्कारों और आस्था की कहानियां हैं। खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला में विष्णु पूजा के साथ लोक नृत्य होते हैं, जो समुदाय की एकता का प्रतीक हैं। शीतलाष्टमी मेला में लोक परंपरा के रूप में एक दिन पहले पका भोजन खाया जाता है, जो स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रतीक है। जसोल रानी भटियानी मेला में लोक गीतों में रानी की वीरता गाई जाती है, जो राजपूत परंपरा को दर्शाते हैं। इन मेलों में लोक प्रतीक जैसे ऊंट, घोड़े और देवी-देवता थार की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाते हैं, जहां रेगिस्तान की कठिनाइयों में भी उत्सव की भावना जीवित रहती है। ये परंपराएं मेलों को थार की सांस्कृतिक धुरी बनाती हैं, जहां लोक जीवन की सादगी और गहराई पर्यटकों को मोहित करती है।

धार्मिक और सामाजिक योगदान के संदर्भ में बाड़मेर के मेले बहुलतावादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहां विभिन्न समुदायों की पूजा और मिलन से सामाजिक एकता आती है। मल्लिनाथ पशु मेला रावल मल्लिनाथ को देवता मानकर पूजा करता है, जहां हिंदू समुदाय एकत्र होता है और धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। यह मेला सामाजिक योगदान में प्रमुख है, जहां पशु व्यापार से विभिन्न जातियों के लोग मिलते हैं और व्यापारिक संबंध बनाते हैं, जो थार के सामाजिक ताने-बाने को मजबूत बनाता है। थार महोत्सव में धार्मिक योगदान कम है, लेकिन सामाजिक मिलन बड़ा है, जहां हिंदू, मुस्लिम और जैन समुदाय एक साथ लोक प्रदर्शन देखते हैं और एकता की भावना पैदा करते हैं। नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला जैन धर्म का प्रमुख केंद्र है, जहां लाखों जैन श्रद्धालु आते हैं और पार्श्वनाथ की पूजा करते हैं, लेकिन यह मेला सामाजिक रूप से सभी समुदायों को जोड़ता है, क्योंकि मंदिर थार के हिंदू और मुस्लिम लोगों के लिए भी आस्था का स्थान है। यहां धार्मिक प्रवचन और भजन सामाजिक सद्भाव लाते हैं, जो थार की बहुलता को दर्शाते हैं। वीरातरा माता मेला देवी पूजा का केंद्र है, जहां स्थानीय लोग माता से मन्नतें मांगते हैं और सामाजिक मिलन मनाते हैं, जो ग्रामीण एकता को बढ़ावा देता है। खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला विष्णु भगवान की पूजा से जुड़ा है, जहां वैष्णव समुदाय एकत्र होता है और सामाजिक भोज आयोजित होते हैं, जो समुदायों में सद्भाव लाते हैं।

शीतलाष्टमी मेला शीतला माता की पूजा करता है, जहां स्वास्थ्य की रक्षा के लिए धार्मिक रीतियां पालन की जाती हैं और सामाजिक रूप से परिवार एक साथ ठंडा भोजन ग्रहण करते हैं, जो एकता की भावना पैदा करती है। जसोल रानी भटियानी मेला रानी भटियानी को देवी रूप में पूजता है, जहां राजपूत और मांगणियार समुदाय मिलकर गीत गाते हैं, जो सामाजिक एकता का प्रतीक है। इन मेलों में धार्मिक पूजा सामाजिक मिलन से जुड़ी है, जहां थार का जल संकट या अन्य चुनौतियां सामूहिक रूप से साझा की जाती हैं। मेले सामाजिक योगदान में महिलाओं और युवाओं को मंच देते हैं, जहां वे भाग लेते हैं और अपनी भूमिका निभाते हैं। कुल मिलाकर, मेले थार की बहुलतावादी संस्कृति को मजबूत बनाते हैं, जहां धार्मिक विविधता सामाजिक एकता का आधार बनती है।

कला और शिल्प का संरक्षण बाड़मेर के मेलों का एक प्रमुख सांस्कृतिक योगदान है, जहां मेलों से जुड़ी कढ़ाई, संगीत और नृत्य परंपराएं पर्यटकों को राजस्थानी संस्कृति से जोड़ती हैं। मल्लिनाथ पशु मेला में कला संरक्षण प्रमुख है, जहां स्थानीय कारीगर कढ़ाई वाली चुनरियां और लकड़ी की नक्काशी बेचते हैं, जो थार की कला को जीवित रखते हैं। संगीत में मांगणियार गायक अपनी धुनों से पर्यटकों को मोहित करते हैं, जो राजस्थानी संगीत की परंपरा को संरक्षित करते हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

थार महोत्सव कला का बड़ा मंच है, जहां कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग और मिट्टी के बर्तनों के स्टॉल लगते हैं, जो कारीगरों को बाजार प्रदान करते हैं। यहां संगीत सत्र और नृत्य प्रदर्शन राजस्थानी कला को पर्यटकों से जोड़ते हैं, जहां घूमर नृत्य की लय थार की महिलाओं की कला दिखाती है। नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला में जैन कला का संरक्षण होता है, जहां जड़ाई काम और चित्रकारी पर्यटकों को आकर्षित करती है, जो राजस्थानी शिल्प से जुड़ती है।

वीरातरा माता मेला में ग्रामीण कला जैसे मिट्टी की मूर्तियां और लोक चित्र बनाए जाते हैं, जो पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति से जोड़ते हैं। खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला में संगीत और नृत्य की परंपराएं संरक्षित होती हैं, जहां वैष्णव भजन राजस्थानी संगीत का हिस्सा हैं। शीतलाष्टमी मेला में कला के रूप में लोक व्यंजन और हस्तशिल्प बिकते हैं, जो राजस्थानी पाक कला को पर्यटकों से जोड़ते हैं। जसोल रानी भटियानी मेला में कढ़ाई और संगीत की परंपराएं जीवित हैं, जहां मांगणियार गीत पर्यटकों को राजस्थानी संस्कृति की गहराई दिखाते हैं। इन मेलों में कला संरक्षण से कारीगरों को प्रोत्साहन मिलता है, जहां वे अपनी कला बेचते हैं और नई पीढ़ी को सिखाते हैं। पर्यटक इन कला रूपों से जुड़ते हैं, जो थार की संस्कृति को वैश्विक बनाते हैं। कुल मिलाकर, मेले कला और शिल्प के संरक्षक हैं, जो राजस्थानी संस्कृति को पर्यटकों तक पहुंचाते हैं। कुल मिलाकर, बाड़मेर के मेले सांस्कृतिक महत्व के बहुआयामी रत्न हैं, जो लोक परंपराओं, धार्मिक सद्भाव और कला संरक्षण के माध्यम से थार की विरासत को अमर बनाते हैं। ये मेले न केवल आस्था के केंद्र हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक पुल हैं, जो अतीत और वर्तमान को जोड़ते हैं और भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं।

II. सांस्कृतिक पर्यटन में मेलों का योगदान

बाड़मेर जिले के मेले सांस्कृतिक पर्यटन के एक मजबूत आधार हैं, जो थार मरुस्थल की रेतीली भूमि पर आयोजित होकर पर्यटकों को लोक जीवन की जीवंत झलक प्रदान करते हैं। ये मेले न केवल धार्मिक और सामाजिक उत्सव हैं, बल्कि वे राजस्थानी संस्कृति की समृद्ध अभिव्यक्ति हैं, जहां लोक प्रदर्शन, पशु व्यापार और हस्तशिल्प मिलकर एक अनोखा अनुभव देते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन में इनका योगदान बहुआयामी है, जो पर्यटकों के आकर्षण से शुरू होकर आर्थिक विकास, सतत प्रगति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान तक फैला हुआ है। राजस्थान जैसे राज्य में, जहां पर्यटन अर्थव्यवस्था का प्रमुख हिस्सा है, बाड़मेर के मेले स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक जुड़ाव पैदा करते हैं और वैश्विक स्तर पर राज्य की छवि को मजबूत बनाते हैं। ये मेले रेगिस्तानी जीवन की चुनौतियों के बीच भी सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखते हैं, जहां पर्यटक न केवल दर्शक बनते हैं, बल्कि स्थानीय परंपराओं में डूब जाते हैं। इस योगदान को समझने के लिए हम पर्यटकों के आकर्षण, आर्थिक प्रभाव, सतत विकास और एक केस स्टडी के माध्यम से विश्लेषण करेंगे, जो बाड़मेर के मेलों को पर्यटन के केंद्र के रूप में स्थापित करते हैं।

पर्यटकों का आकर्षण बाड़मेर के मेलों से प्रेरित होता है, जहां लोक प्रदर्शन और पशु व्यापार पर्यटन को एक अनोखा आयाम देते हैं, जैसे थार महोत्सव के कार्यक्रम जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को खींचते हैं। थार महोत्सव मे ऊंट दौड़, लोक नृत्य जैसे घूमर और कालबेलिया, तथा मांगणियार समुदाय के संगीत प्रदर्शन प्रमुख आकर्षण हैं, जो थार की रेगिस्तानी संस्कृति की जीवंत झलक देते हैं। राष्ट्रीय पर्यटक यहां लोक जीवन का अनुभव लेने आते हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय पर्यटक रेगिस्तानी परिवेश में प्राचीन परंपराओं से मोहित होते हैं। उदाहरण के लिए, ऊंट दौड़ में सजे हुए ऊंटों की दौड़ थार के पशुपालन जीवन को दर्शाती है, जो पर्यटकों को फोटोग्राफी और एडवेंचर का अवसर देती है। मल्लिनाथ पशु मेला भारत का सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है। यहां ऊंट, घोड़े और गायों का व्यापार पर्यटकों को रेगिस्तानी अर्थव्यवस्था से जोड़ता है, जहां वे पशुओं की नस्लों और व्यापार की प्रक्रिया देखते हैं। लोक प्रदर्शन जैसे मांगणियार गीत और घूमर नृत्य यहां पर्यटकों को थार की सांस्कृतिक गहराई से परिचित कराते हैं। नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला, जहां पार्श्वनाथ भगवान की पूजा और जैन अनुष्ठान पर्यटकों को धार्मिक पर्यटन का अनुभव देते हैं। वीरातरा माता मेला ग्रामीण स्तर पर देवी पूजा से

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

प्रेरित है, जहां लोक कथाएं और नृत्य पर्यटकों को स्थानीय आस्था से जोड़ते हैं। खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला विष्णु पूजा से जुड़ा है, जहां भजन और कीर्तन राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

शीतलाष्टमी मेला शीतला माता की पूजा से स्वास्थ्य की रक्षा का प्रतीक है, जहां लोक व्यंजन और प्रदर्शन पर्यटकों को थार की पाक कला से परिचित कराते हैं। जसोल रानी भटियानी मेला रानी भटियानी की देवी पूजा से प्रेरित है, जहां राजपूत गाथाएं और लोक गीत अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को मोहित करते हैं। ये मेले लोक प्रदर्शनों से सांस्कृतिक पर्यटन को समृद्ध बनाते हैं, जहां पर्यटक फोटो खींचते हैं और स्थानीय जीवन में भाग लेते हैं। राजस्थान में मेलों से पर्यटन वृद्धि 10-15 प्रतिशत तक होती है, जो बाड़मेर जैसे जिलों में स्पष्ट है। कुल मिलाकर, बाड़मेर के मेले लोक प्रदर्शन और पशु व्यापार से प्रेरित पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, जो राष्ट्रीय पर्यटकों को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को रेगिस्तानी रहस्य से परिचित कराते हैं। पर्यटक यहां आकर न केवल दर्शक बनते हैं, बल्कि थार की परंपराओं में डूब जाते हैं, जो सांस्कृतिक पर्यटन की सच्ची भावना है।

आर्थिक प्रभाव के मामले में बाड़मेर के मेले पर्यटन से प्राप्त राजस्व का बड़ा योगदान देते हैं, जो हस्तशिल्प बाजार, रोजगार सृजन और स्थानीय विकास में लगता है। मल्लिनाथ मेला इसका प्रमुख उदाहरण है, जहां हजारों पशुओं का व्यापार लाखों रुपये का कारोबार करता है। यह मेला तिलवाड़ा में दो सप्ताह तक चलता है, जहां ऊंट, घोड़े और गायों की बिक्री से किसानों और व्यापारियों की आय बढ़ती है। पर्यटक यहां आने से आसपास के होटल, परिवहन और दुकानें चलती हैं, जो स्थानीय रोजगार पैदा करते हैं। थार महोत्सव से आर्थिक प्रभाव और भी बड़ा है, जहां लोक प्रदर्शन और हस्तशिल्प बाजार पर्यटकों से लाखों रुपये कमाते हैं। महोत्सव में कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग और लकड़ी की नक्काशी की बिक्री कारीगरों को लाभ पहुंचाती है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है। राजस्थान में पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था का 12 प्रतिशत हिस्सा है, और बाड़मेर जैसे जिलों में मेले इस योगदान को बढ़ाते हैं। नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला लाखों दर्शनार्थियों से राजस्व उत्पन्न करता है, जहां दान, दुकानें और परिवहन रोजगार सृजित करते हैं।

वीरातरा माता मेला ग्रामीण स्तर पर हस्तशिल्प बाजार चलाता है, जहां स्थानीय उत्पाद बिकते हैं। खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला पूजा सामग्री और भोजन से आय देता है। शीतलाष्टमी मेला लोक व्यंजनों से बाजार को गति देता है। जसोल रानी भटियानी मेला गीत प्रदर्शन से कलाकारों को आय प्रदान करता है। मेले से प्राप्त राजस्व मंदिर संरक्षण और गांव विकास में लगता है, जैसे सड़कें और पानी की व्यवस्था। हस्तशिल्प बाजारों में पर्यटक ऊनी उत्पाद और मिट्टी के बर्तन खरीदते हैं, जो कारीगर परिवारों की आय दोगुनी करते हैं। उदाहरण के लिए, मल्लिनाथ मेला से पशु व्यापार लाखों का होता है, जो होटल और परिवहन को लाभ पहुंचाता है। ये मेले पर्यटन से प्राप्त धन को सामुदायिक विकास में लगाते हैं, जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य। कुल मिलाकर, मेले बाड़मेर की अर्थव्यवस्था को जीवंत बनाते हैं, जहां राजस्व संरक्षण और रोजगार के चक्र में बदल जाता है।

सतत विकास के संदर्भ में मेला-केंद्रित पर्यटन सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, जो राजस्थान की समग्र पर्यटन छवि को मजबूत करता है। मल्लिनाथ मेला पशु व्यापार से पर्यटकों को थार की अर्थव्यवस्था से जोड़ता है, जो सतत पशुपालन को प्रोत्साहित करता है। थार महोत्सव में लोक प्रदर्शन पर्यटकों को थार की कला से परिचित कराते हैं, जो कारीगरों को वैश्विक पहचान देते हैं। UNESCO की परियोजना से जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर में ग्रामीण सांस्कृतिक पर्यटन विकसित हो रहा है, जो मेले केंद्रित है। नाकोड़ा मेला जैन सिद्धांतों का प्रसार करता है, जो पर्यटकों को अहिंसा की शिक्षा देता है। वीरातरा मेला देवी पूजा से पर्यावरण संरक्षण की बात करता है। खेड़ मेला वैष्णव परंपरा से सतत जीवनशैली सिखाता है। शीतलाष्टमी मेला स्वास्थ्य रक्षा से सतत विकास को जोड़ता है। जसोल मेला लोक गीतों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान करता है। ये मेले सतत पर्यटन मॉडल बनाते हैं, जहां पर्यावरण संरक्षण के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। इस प्रकार मेले राजस्थान की पर्यटन छवि को मजबूत बनाते हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

III. चुनौतियाँ और सुझाव

बाड़मेर जिले के मेले थार मरुस्थल की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन इनके आयोजन और विकास में कई चुनौतियां हैं जो उनकी निरंतरता और पर्यटन क्षमता को प्रभावित करती हैं। रेगिस्तानी मौसम, अवसंरचना की कमी और बढ़ते पर्यटन दबाव से उत्पन्न समस्याएं इन मेलों की विरासत को खतरे में डाल रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं, जो डिजिटल माध्यमों, सरकारी योजनाओं और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित हैं। यह खंड इन पहलुओं का विस्तार से विश्लेषण करेगा, ताकि सतत मेला मॉडल विकसित किया जा सके।

चुनौतियों की बात करें तो सबसे प्रमुख है- रेगिस्तानी मौसम से प्रभावित आयोजन। बाड़मेर जिला थार मरुस्थल का हिस्सा है, जहां तेज हवाएं, कम वर्षा और उच्च तापमान मेलों के आयोजन को कठिन बनाते हैं। हवा से उड़ती रेत आयोजन स्थलों को प्रभावित करती है, जिससे स्टॉलों और प्रदर्शनों में बाधा आती है। उदाहरण के लिए, थार महोत्सव मार्च में आयोजित होता है, जब गर्मी शुरू हो जाती है और तापमान 40 डिग्री से ऊपर पहुंच जाता है, जो पर्यटकों और स्थानीय लोगों की भागीदारी को कम करता है। 4 मल्लिनाथ पशु मेला चैत्र माह में दो सप्ताह तक चलता है, लेकिन रेगिस्तानी मौसम से पशुओं की संख्या में कमी आती है, क्योंकि जल संकट और चारे की कमी से पशुपालक दूर रहते हैं। लूनी नदी के किनारे तिलवाड़ा गांव में आयोजित यह मेला सूखे की स्थिति में प्रभावित होता है, जहां पानी की कमी से पशुओं को पानी पिलाना चुनौतीपूर्ण होता है। नाकोड़ा पार्श्वनाथ मेला दिसंबर-जनवरी में सर्दियों में लगता है, लेकिन ठंडी रातें और धूल भरी हवाएं श्रद्धालुओं की स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ाती हैं। वीरातरा माता मेला ग्रामीण क्षेत्र में आयोजित होता है, जहां रेगिस्तानी बाढ़ या सूखा आयोजन को रद्द कर सकता है। खेड़ वैष्णव तीर्थ मेला लूनी नदी के किनारे है, जहां जल स्तर की अनिश्चितता समस्या पैदा करती है। शीतलाष्टमी मेला मार्च-अप्रैल में गर्मी से प्रभावित होता है। जसोल रानी भटियानी मेला नवरात्रि में लगता है, लेकिन रेगिस्तानी मौसम से धूल प्रदूषण बढ़ता है। थार क्षेत्र में मिट्टी का क्षरण 44 प्रतिशत क्षेत्र को प्रभावित करता है, जो मेला स्थलों को अस्थिर बनाता है। जल संकट और चारे की कमी पशु मेलों को सीधे प्रभावित करती है, क्योंकि थारपारकर नस्ल के पशु रेगिस्तानी जीवन पर निर्भर हैं। यह चुनौती न केवल आयोजन को प्रभावित करती है, बल्कि पर्यटकों की सुरक्षा को भी जोखिम में डालती है, क्योंकि तेज धूप और रेत के तूफान यात्रा को कठिन बनाते हैं।

दूसरी बड़ी चुनौती है- अवसंरचना की कमी। बाड़मेर जैसे दूरदराज के इलाके में सड़कें, होटल, परिवहन और स्वास्थ्य सुविधाएं अपर्याप्त हैं, जो पर्यटकों को आने से रोकती हैं। थार महोत्सव बाड़मेर शहर में आयोजित होता है, लेकिन निकटतम हवाई अड्डा जोधपुर 220 किलोमीटर दूर है, जो अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए समस्या है। मल्लिनाथ मेला तिलवाड़ा गांव में है, लेकिन वहां पहुंचने वाली सड़कें खराब हैं, जिससे पशु और पर्यटक असुविधा झेलते हैं। नाकोड़ा मेला 120 किलोमीटर दूर है, लेकिन स्थानीय बसें और टैक्सी की कमी से श्रद्धालु हिचकते हैं। वीरातरा मेला ग्रामीण क्षेत्र में है, जहां बिजली और पानी की कमी आयोजन को प्रभावित करती है। खेड़ मेला लूनी नदी किनारे है, लेकिन पुल और सड़कों की कमी समस्या है। शीतलाष्टमी मेला शहर में लगता है, लेकिन स्वच्छता सुविधाओं की कमी पर्यटकों को निराश करती है। जसोल मेला गांव में है, जहां आवास की कमी है। बाड़मेर रेलवे स्टेशन से जुड़ाव है, लेकिन मेला स्थलों तक पहुंचने के लिए स्थानीय परिवहन की कमी है। इंटरनेट और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी पर्यटकों को असुविधा देती है, जैसे महाबार रेत टिब्बों जैसे स्थलों पर कोई बुनियादी सुविधा नहीं है। पश्चिमी राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए कनेक्टिविटी की कमी एक प्रमुख बाधा है, जो बाड़मेर जैसे कम प्रसिद्ध जिलों को प्रभावित करती है।

तीसरी चुनौती है- अतिपर्यटन से सांस्कृतिक प्रदूषण। हालांकि बाड़मेर अभी बड़े पैमाने पर पर्यटन से प्रभावित नहीं है, लेकिन थार महोत्सव और नाकोड़ा मेला जैसे आयोजनों पर लाखों लोग आते हैं, जो भीड़भाड़ पैदा करते हैं। इससे स्थानीय संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जैसे लोक परंपराओं का व्यावसायीकरण। मांगणियार गीत पर्यटकों के लिए प्रदर्शन

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

बन जाते हैं, लेकिन उनकी मूल भावना खो जाती है। अतिपर्यटन से कचरा बढ़ता है, जो मेला स्थलों को प्रदूषित करता है। राजस्थान में अन्य स्थलों जैसे जयपुर में अतिपर्यटन से संसाधनों पर दबाव पड़ता है, जो बाड़मेर में भी फैल सकता है। पशु मेलों में पुरुष मवेशियों की बिक्री पर प्रतिबंध से आगमन कम हुआ है, जो सांस्कृतिक व्यापार को प्रभावित करता है। इससे सांस्कृतिक स्थलों की प्रामाणिकता कम होती है, क्योंकि पर्यटक स्थानीय रीति-रिवाजों को बदल देते हैं। पानी की कमी वाले क्षेत्र में पर्यटकों की बढ़ती संख्या जल संकट को गहरा सकती है, जो स्थानीय समुदायों के लिए समस्या है। ये चुनौतियां सांस्कृतिक विरासत को खतरे में डालती हैं, जहां आर्थिक लाभ के चक्कर में मूल संस्कृति नष्ट हो सकती है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं, जो सतत विकास पर आधारित हैं। पहला सुझाव है- डिजिटल प्रचार का उपयोग। बाड़मेर के मेलों को सोशल मीडिया, वेबसाइट और ऐप्स के माध्यम से प्रचारित किया जा सकता है, ताकि अधिक पर्यटक आएं लेकिन भीड़ को नियंत्रित किया जाए। उदाहरण के लिए, थार महोत्सव की वीडियो और वर्चुअल टूर से दुनिया तक पहुंचाया जा सकता है। राजस्थान पर्यटन विभाग की वेबसाइट पर मेलों को विशेष स्थान देकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। डिजिटल माध्यम से पर्यटकों को पूर्व जानकारी दी जा सकती है, जैसे मौसम की चेतावनी या सस्टेनेबल ट्रैवल टिप्स, जो प्रदूषण को कम करेगी। ऑनलाइन बुकिंग सिस्टम से पर्यटकों की संख्या नियंत्रित की जा सकती है, जो अतिपर्यटन से बचाएगा।

दूसरा सुझाव है- सरकारी योजनाओं के माध्यम से विकास। राजस्थान सरकार की योजनाएं जैसे स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजना मेलों के विकास के लिए उपयोगी हैं, जहां पर्यटन स्थलों को विकसित किया जाता है। हेरिटेज कंजर्वेशन के लिए एडॉप्ट ए हेरिटेज योजना के तहत निजी कंपनियां मेलों को गोद ले सकती हैं, जैसे मल्लिनाथ मेला के संरक्षण के लिए। ग्रीन बजट में सस्टेनेबल विकास के लिए धन आवंटित है, जो रेगिस्तानी क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण पर खर्च किया जा सकता है। शेखावाटी हवेली कंजर्वेशन स्कीम की तरह बाड़मेर के मेलों के लिए विशेष योजना बनाई जा सकती है, जहां मौसमी प्रभाव से बचाव के लिए वैज्ञानिक तरीके अपनाए जाएं। सरकारी स्तर पर अवसंरचना विकास जैसे सड़कों का निर्माण, जो जोधपुर से बाड़मेर को बेहतर जोड़े, पर्यटन को बढ़ावा देगा। एचआरआईडीई योजना से हेरिटेज सिटी विकास किया जा सकता है, जहां सांस्कृतिक स्थलों को संरक्षित किया जाए। ये योजनाएं आर्थिक विकास के साथ विरासत बचाव सुनिश्चित करेंगी।

तीसरा सुझाव है- सामुदायिक भागीदारी से सतत मेला मॉडल का निर्माण। स्थानीय समुदायों को शामिल करके पर्यटन को सस्टेनेबल बनाया जा सकता है, जैसे मांगणियार या ढोली समुदाय को लोक प्रदर्शनों में भागीदार बनाना। सामुदायिक कार्यशालाएं आयोजित करके कारीगरों को हस्तशिल्प बेचने के अवसर दिए जा सकते हैं, जो आर्थिक लाभ देगा और संस्कृति बचाएगा। प्रकृति आधारित समाधान जैसे पेड़ लगाना और जल संरक्षण से मौसमी प्रभाव रोका जा सकता है। पर्यटकों को जिम्मेदार पर्यटन की शिक्षा देकर कचरा प्रबंधन और सांस्कृतिक सम्मान सिखाया जा सकता है। थार महोत्सव जैसे कार्यक्रमों में समुदाय की भूमिका बढ़ाकर पर्यटन को संतुलित किया जा सकता है। ये सुझाव चुनौतियों को अवसर में बदलेंगे, जहां बाड़मेर के मेले सांस्कृतिक पर्यटन के मजबूत आधार बनेंगे। कुल मिलाकर, चुनौतियां गंभीर हैं लेकिन सुझावों से इन्हें दूर किया जा सकता है, जो बाड़मेर की सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखेंगे।

IV. निष्कर्ष

बाड़मेर जिले के मेले सांस्कृतिक पर्यटन के मजबूत आधार स्तंभ हैं, जो इतिहास की गहराइयों, आस्था की पवित्रता और अर्थव्यवस्था की गति को एक सूत्र में बांधते हैं। इस शोध से स्पष्ट होता है कि ये मेले थार मरुस्थल की रेतीली भूमि पर आयोजित होकर राजस्थानी संस्कृति की जीवंतता को बनाए रखते हैं। कुल मिलाकर, बाड़मेर के मेले इतिहास की किताब के पन्ने हैं, जो आस्था की रोशनी से अर्थव्यवस्था को रोशन करते हैं और सांस्कृतिक पर्यटन को नई दिशा देते हैं। ये न केवल धार्मिक केंद्र हैं, बल्कि वे थार की सांस्कृतिक पहचान के संरक्षक हैं, जो स्थानीय जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

भविष्य दृष्टि में, उचित संरक्षण से ये मेले राजस्थान की वैश्विक पर्यटन पहचान को और मजबूत करेंगे। रेगिस्तानी मौसम से प्रभावित आयोजन और अवसंरचना की कमी जैसी चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल प्रचार, सरकारी योजनाएं और सामुदायिक भागीदारी से सतत विकास संभव है। उचित संरक्षण से न केवल विरासत बचेगी, बल्कि पर्यटन से प्राप्त आय ग्रामीण विकास को गति देगी। अंत में, बाड़मेर के मेले राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को दुनिया के मानचित्र पर और चमकदार बनाएंगे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

संदर्भ सूची

1. डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान (2020) ट्वेंटी ईयर पर्स्पेक्टिव प्लान फॉर सस्टेनेबल टूरिज्म इन राजस्थान, टूरिज्म.गॉव.इन, दिल्ली, पृ. 2
2. डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान। (n.d.) फेयर्स एंड फेस्टिवल्स, टूरिज्म.राजस्थान.गॉव.इन, जयपुर, पृ. 13
3. डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान (2021) असेसमेंट ऑफ इम्पैक्ट ऑफ फेयर्स एंड फेस्टिवल्स बीइंग हेल्ड इन डिफरेंट पार्ट्स ऑफ द कंट्री, टूरिज्म.गॉव.इन, दिल्ली, पृ. 12-14
4. डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, वेलकम टू राजस्थान- ऑफिशियल वेबसाइट ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म, टूरिज्म.राजस्थान.गॉव.इन, जयपुर, पृ. 5
5. श्रीवास्तव, एस. (2021) ट्राइबल टूरिज्म डेवलपमेंट थ्रू ट्राइबल फेयर्स इन राजस्थान, इंडिया, टेलर एंड फ्रांसिस, लंदन, पृ. 89
6. श्रीवास्तव, एम., & कुमार, ए. (2020) रिफ्लेक्शन ऑफ रीजनल कल्चर एंड इमेज इन द फॉर्म ऑफ क्यूलिनरी टूरिज्म: राजस्थान, आईजेटीएसआरडी, दिल्ली, पृ. 123
7. कुमार, आर. (2013) टूरिज्म इन राजस्थान: चैलेंजेस एंड ऑपर्च्युनिटीज, इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, दिल्ली, पृ. 56-58
8. शर्मा, पी. (2021) फेस्टिवल्स फॉर सस्टेनेबल टूरिज्म डेवलपमेंट: ए केस स्टडी ऑफ मारवाड़ रीजन ऑफ राजस्थान, रिसर्चगेट, दिल्ली, पृ. 15
9. सिंह, ए. (n.d.) द इम्पैक्ट ऑफ इवेंट्स ऑन राजस्थान टूरिज्म विद रेफरेंस टू डिफरेंट फेयर एंड फेस्टिवल्स, एकेडेमिया.एडु, दिल्ली, पृ. 20
10. राजआरएएस। (2024) लिटरेचर, आर्ट, आर्किटेक्चर, कल्चर एंड हेरिटेज ऑफ राजस्थान, राजआरएएस.इन, जयपुर, पृ.50
11. इकोनॉमिक टाइम्स गवर्नमेंट। (2025) राजस्थान्स फोक ट्रेडिशंस: ए विब्रेंट हब ऑफ कल्चरल टूरिज्म, इकोनॉमिकटाइम्स.इन, दिल्ली, पृ.10
12. इकोनॉमिक टाइम्स गवर्नमेंट। (2025) हेरिटेज मीट्स ग्रोथ: वेस्टर्न राजस्थान्स टूरिज्म राइज पावर्स रीजनल इकोनॉमी, इकोनॉमिकटाइम्स.इन, दिल्ली, पृ.12
13. थॉमस कुक (2025) टॉप 5 थिंग्स अबाउट लोकल आर्ट एंड कल्चर ऑफ राजस्थान, थॉमस्कुक.इन, मुंबई, पृ.8
14. रूरल हैंडमेड (2025) ज्योग्राफिकल इंडिकेशंस एंड द ट्रेडिशनल क्राफ्ट्स ऑफ बाड़मेर, राजस्थान, रूरलहैंडमेड.कॉम, दिल्ली, पृ.29
15. शर्मा, वी., सोशियो-कल्चरल इम्पैक्ट्स ऑफ टूरिज्म इन द सिटी ऑफ पुष्कर, राजस्थान, आईजेएचएसएसआई, दिल्ली, पृ. 57-58
16. कुमार, एस. (2023) टूरिज्म इन राजस्थान- विद स्पेशल रेफरेंस टू जैसलमेर। आईजेआरटीआई, दिल्ली, पृ. 156

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204061

17. इंडियन जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, राजस्थानी आर्ट्स एंड कल्चर: एक्विजिशन ऑफ इंफॉर्मेशन रिसोर्सेस एंड सर्विसेस इन यूनिवर्सिटी एंड इंस्टिट्यूशनल लाइब्रेरीज ऑफ राजस्थान, आईएलएइंडिया.नेट, दिल्ली, पृ. 16
18. इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स, कल्चरल हेरिटेज ऑफ राजस्थान, आईजीएनसीए.गॉव.इन, दिल्ली, पृ. 20-22
19. सक्सेना, डी. (2022) राजस्थान के मेले और त्योहार: सांस्कृतिक पर्यटन का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ इंडियन कल्चरल स्टडीज, दिल्ली, पृ. 45-48
20. गुप्ता, आर. (2024) बाड़मेर के मेलों में लोक कला और परंपराओं का योगदान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन हेरिटेज, दिल्ली, पृ. 78
21. दासोरा, आर. के. (2010) राजस्थान के मेले और त्योहार, जयपुर प्रकाशन, जयपुर, पृ. 152
22. मेहता, एस. (2015) फेयर्स एंड फेस्टिवल्स ऑफ राजस्थान, इंडियन हेरिटेज बुक्स, दिल्ली, पृ. 82
23. शर्मा, वी. (2018) कल्चर एंड ट्रेडिशंस ऑफ थार डेजर्ट: ए स्टडी ऑफ बाड़मेर फेयर्स, राज प्रकाशन, जोधपुर, पृ. 129
24. सिंह, के. (2022) राजस्थान की लोक संस्कृति: मेले और उत्सव, हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 91
25. गुप्ता, आर. (2024) बाड़मेर के मेलों में सांस्कृतिक विरासत, थार बुक्स, बाड़मेर, पृ. 75

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 8.152

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com